RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENSE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
सितम्बर
10
2024

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defense News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors
13. Index

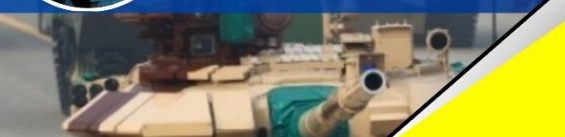

By Ankit Avasthi Sir

प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना (PM-KMY) के पांच सफल वर्ष

भारत सरकार द्वारा शुरू की गई **प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना (PM-KMY)** को **5 वर्ष पुरे** हो गए हैं। यह **योजना 12 सितंबर, 2019 को शुरू** की गई थी और इसका मुख्य उद्देश्य **किसानों को बुढ़ापे में आर्थिक सुरक्षा प्रदान** करना है।

- ✓ इस योजना के तहत, **60 वर्ष की आयु पूरी करने वाले किसानों को 3000 रुपये प्रति माह** की पेंशन मिलती है।

योजना का सफल कार्यान्वयन:

- प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना के तहत 18 से 40 वर्ष की आयु के किसानों को **55 से 200 रुपये प्रति माह** का योगदान करना होता है, जब तक कि वे **60 वर्ष** की आयु प्राप्त नहीं कर लेते।
- इसके बाद **किसानों को 3,000 रुपये की मासिक पेंशन** मिलती है। इस योजना के तहत **अब तक 23.38 लाख किसानों ने पंजीकरण** कराया है।

योजना के प्रमुख लाभ:

1. **न्यूनतम सुनिश्चित पेंशन -** सभी पात्र किसानों को **60 वर्ष की आयु के बाद 3,000 रुपये** की मासिक पेंशन सुनिश्चित होती है।
2. **पारिवारिक पेंशन -** यदि पेंशन प्राप्त करते समय किसी लाभार्थी की मृत्यु हो जाती है, तो उसका **जीवनसाथी 1,500 रुपये की पारिवारिक पेंशन** का हकदार होता है।
3. **पीएम-किसान लाभ का उपयोग -** पात्र किसान पीएम-किसान योजना से मिलने वाले लाभ का उपयोग **पीएम-केएमवाई** के लिए अंशदान करने में कर सकते हैं।
4. **सरकार द्वारा बराबर योगदान** - केंद्र सरकार किसानों द्वारा दिए गए योगदान के **बराबर राशि** पेंशन फंड में जमा करती है।

योजना का प्रभाव:

पीएम-केएमवाई ने देश के किसानों के जीवन में कई सकारात्मक बदलाव लाए हैं:

- ✓ **आर्थिक सुरक्षा:** किसानों को बुढ़ापे में आर्थिक सुरक्षा मिल रही है।
- ✓ **सशक्तीकरण:** योजना किसानों को आत्मनिर्भर बनाने में मदद कर रही है।
- ✓ **सामाजिक सुरक्षा:** यह योजना किसानों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करती है।
- ✓ **ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार:** योजना ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में मदद कर रही है।

निष्कर्ष:

- प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना एक ऐतिहासिक पहल है जिसने देश के किसानों के जीवन में एक नई उम्मीद जगाई है।
- यह योजना न केवल किसानों को **आर्थिक सुरक्षा प्रदान** करती है बल्कि उन्हें **सशक्त** भी बनाती है।
- आने वाले समय में इस योजना से देश के **कृषि क्षेत्र को और मजबूती** मिलेगी

योजना की सफलता:

- पिछले **पांच वर्षों** में पीएम-केएमवाई ने देश भर में **लाखों किसानों** को अपने दायरे में लाया है।
- **बिहार 3.4 लाख** से अधिक पंजीकरणों के साथ अग्रणी है जबकि **झारखंड 2.5 लाख** से अधिक पंजीकरणों के साथ **दूसरे स्थान** पर है।
- इसके अलावा, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ और ओडिशा में क्रमशः **2.5 लाख, 2 लाख और 1.5 लाख से अधिक किसान पंजीकृत** हैं।

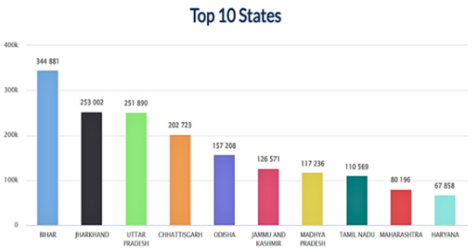

विस्तृत जानकारी:

- **योजना की शुरुआत:** 12 सितंबर, 2019
- **पेंशन की राशि:** 60 वर्ष की आयु के बाद 3000 रुपये प्रति माह
- **पात्रता:** 2 हेक्टेयर तक की खेती योग्य भूमि वाले किसान
- **सरकारी योगदान:** किसान के योगदान के बराबर

भारत का पहला सिलिकॉन कार्बाइड विनिर्माण संयंत्र

भारत का पहला सिलिकॉन कार्बाइड विनिर्माण संयंत्र ओडिशा में स्थापित किया जाएगा। इस परियोजना का विकास भारत की **सेमीकंडक्टर पावर इलेक्ट्रॉनिक्स प्रौद्योगिकी** में अग्रणी कंपनी **आरआईआर पावर इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड द्वारा ईएमसी पार्क, इन्फोवैली, भुवनेश्वर** में किया जाएगा। इसमें तीन वर्षों में कुल **620 करोड़ रुपए निवेश** किए गए हैं।

- ✓ यह सुविधा अनुसंधान एवं विकास से लेकर फैक्ट्री संचालन तक विभिन्न स्तरों पर **500 से अधिक नए रोजगार सृजित** करेगी, जिससे बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे।
- ✓ इसके अलावा, यह सर्वोत्तम प्रथाओं और सतत ऊर्जा को लागू करके भुवनेश्वर के **औद्योगिक परिदृश्य** को बढ़ाएगा, तथा **कुशल और विविध कार्यबल का निर्माण** करते हुए **उन्नत प्रौद्योगिकियों के विकास** को बढ़ावा देगा।

सिलिकॉन कार्बाइड के बारे में :

सिलिकॉन कार्बाइड (SiC) एक **अत्यंत कठोर और टिकाऊ पदार्थ** है जो सिलिकॉन और कार्बन तत्वों के संयोजन से बनता है। इसे **कार्बोरंडम** के नाम से भी जाना जाता है। इसकी खोज **1891** में **एडवर्ड जी. अचेसन** ने की थी। अपनी असाधारण गुणों के कारण, यह पदार्थ विभिन्न उद्योगों में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

सिलिकॉन कार्बाइड के गुण:

- **कठोरता:** हीरे के बाद सिलिकॉन कार्बाइड सबसे कठोर पदार्थों में से एक है।
- **उच्च तापमान सहनशीलता:** यह बेहद उच्च तापमान को सहन कर सकता है और इसमें कम थर्मल विस्तार होता है।
- **रासायनिक निष्क्रियता:** यह अधिकांश रसायनों के प्रति प्रतिरोधी होता है।
- **उच्च शक्ति:** इसमें उच्च यांत्रिक शक्ति होती है।
- **अर्धचालक गुण:** कुछ विशेष परिस्थितियों में, सिलिकॉन कार्बाइड अर्धचालक के रूप में व्यवहार करता है।

भविष्य में सिलिकॉन कार्बाइड:

- सिलिकॉन कार्बाइड के **अनुप्रयोगों** का दायरा लगातार बढ़ रहा है।
- वैज्ञानिक और इंजीनियर इस पदार्थ के नए और बेहतर उपयोग खोजने के लिए लगातार काम कर रहे हैं।
- भविष्य में, सिलिकॉन कार्बाइड का उपयोग **विद्युत वाहनों, नवीकरणीय ऊर्जा और अन्य उभरते हुए तकनीकों** में और अधिक व्यापक रूप से किया जा सकता है।

सिलिकॉन कार्बाइड के उपयोग

सिलिकॉन कार्बाइड के उत्कृष्ट गुणों के कारण, इसका उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है-

- **अपघर्षक (Abrasive):** इसकी उच्च कठोरता के कारण, इसे विभिन्न सामग्रियों को **पीसने** और **पॉलिश** करने के लिए **अपघर्षक** के रूप में उपयोग किया जाता है।
- **इलेक्ट्रॉनिक्स:** सिलिकॉन कार्बाइड का उपयोग उच्च तापमान और उच्च शक्ति वाले इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जैसे कि पावर **इलेक्ट्रॉनिक्स**, **एलईडी** और सोलर सेल्स में किया जाता है।
- **रेफ्रैक्टरी सामग्री:** इसकी उच्च तापमान सहनशीलता के कारण, इसका उपयोग उच्च तापमान वाले वातावरण में उपयोग किए जाने वाले उत्पादों जैसे कि **फर्नेस लाइनिंग और ब्रेक पैड** में किया जाता है।
- **सुरक्षा उपकरण:** इसकी उच्च शक्ति और कठोरता के कारण, इसका उपयोग सुरक्षा उपकरणों जैसे कि **बुलेटप्रूफ वेस्ट** और **कवच** में किया जाता है।
- **अंतरिक्ष उद्योग:** सिलिकॉन कार्बाइड का **उपयोग अंतरिक्ष यान** के निर्माण में भी किया

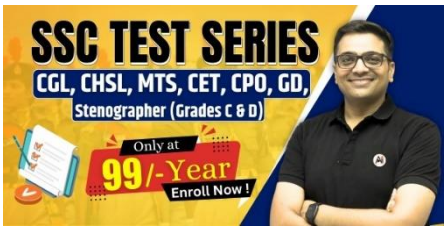

भारत का पहला 'टेल कार्बन' पर अध्ययन

राजस्थान के भरतपुर जिले के केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (केएनपी) में **भारत का पहला 'टेल कार्बन'** पर अध्ययन किया गया।

- ✓ इस अध्ययन ने जलवायु अनुकूलन और लचीलेपन की चुनौतियों का समाधान करने के लिए **वेटलैंड संरक्षण** के महत्व पर प्रकाश डाला है।
- ✓ इस पायलट परियोजना का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन का समाधान करने के लिए **समग्र प्रकृति-आधारित समाधान विकसित** करना था।

'टेल कार्बन' के बारे में :

- **टेल कार्बन** एक ऐसा शब्द है जो हाल ही में पर्यावरण विज्ञान में सामने आया है।
- यह उन कार्बन तत्वों को संदर्भित करता है जो **मीठे पानी के वेटलैंड्स (जैसे तालाब, झीलें, दलदल)** में संग्रहीत होते हैं।
- ये कार्बन तत्व **वनस्पति, सूक्ष्मजीवों और पानी में घुले हुए** पदार्थों में पाए जाते हैं।
- **वेटलैंड्स ग्रीनहाउस गैसों को नियंत्रित** करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन **वे प्रदूषण, भूमि उपयोग परिवर्तन, और जल निष्कर्षण** के प्रति भी संवेदनशील हैं।

अध्ययन के महत्वपूर्ण निष्कर्ष:

- ✓ केएनपी में किए गए इस अध्ययन ने वेटलैंड्स में **'टेल कार्बन'** की भूमिका को महत्वपूर्ण रूप से सामने रखा है।
- ✓ अध्ययन ने यह साबित किया है कि यदि वेटलैंड्स में **मानवजनित प्रदूषण को नियंत्रित** किया जाए, तो ये **कार्बन उत्सर्जन को कम** करने में सहायक हो सकते हैं।
- ✓ विशेष प्रकार के **बायोचार का उपयोग मीथेन उत्सर्जन को कम करने** के लिए एक संभावित समाधान हो सकता है।

स्रोत और शोध सहयोग:

- इस व्यापक अध्ययन का नेतृत्व राजस्थान के **केंद्रीय विश्वविद्यालय** के शोधकर्ताओं ने किया, जिन्होंने **अमेरिकी पर्यावरण संरक्षण एजेंसी (EPA) और ओहियो के केनियन कॉलेज** के साथ सहयोग किया।
- इस अध्ययन ने **टेल कार्बन पारिस्थितिक तंत्रों की जलवायु परिवर्तन को कम करने** में भूमिका का मूल्यांकन किया।

भविष्य की दिशा और संभावनाएँ:

- अध्ययन के प्रारंभिक परिणामों से संकेत मिलता है कि वेटलैंड्स की **प्रभावी संरक्षण और उपयुक्त वनस्पति** के चयन से 'टेल कार्बन' पूल को बनाए रखा जा सकता है।
- यह **भूमिगत जल स्तर, बाढ़ शमन, और गर्मी द्वीप में कमी** में योगदान देगा।
- **ग्रीनहाउस गैस माप उपकरणों** की सहायता से इन उत्सर्जनों को प्रभावी ढंग से **मॉनिटर और प्रबंधित** किया जा सकता है।

कार्बन के प्रकार:

- **बैंगनी -** हवा या औद्योगिक उत्सर्जन के माध्यम से कैप्चर की गई कार्बन
- **नीला -** समुद्री पादप और तलछट में संचित कार्बन
- **टील -** ताजे पानी और आर्द्रभूमि पारितंत्र में संचित कार्बन
- **हरा -** स्थलीय पादपों में संचित कार्बन
- **काला -** जीवाश्म ईंधन के दहन से उत्सर्जित होने वाला कार्बन
- **ग्रे -** औद्योगिक स्रोतों के माध्यम से उत्सर्जित होने वाला कार्बन
- **भूरा -** कार्बनिक पदार्थों के अपूर्ण दहन से उत्सर्जित होने वाला कार्बन
- **लाल -** बर्फ और हिम पर मौजूद जैविक कणों (जो हिम के एल्बिडो को कम करते हैं) द्वारा उत्सर्जित

वैश्विक संदर्भ:

- वैश्विक स्तर पर, टेल कार्बन पारिस्थितिक तंत्रों में भंडारण का अनुमान **500.21 पेटाग्राम कार्बन** (PgC) है, जिसमें **पीटलैंड्स, फ्रेशवाटर स्वैम्प्स, और प्राकृतिक फ्रेशवाटर मार्श** शामिल हैं।
- हाल ही में **स्टॉकहोम, स्वीडन में वन अनुसंधान संगठनों** के विश्व सम्मेलन में इस अध्ययन के निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए, जहां **प्राकृतिक कार्बन भंडारण की प्रभावकारिता और उत्सर्जन कम करने** के लिए संरक्षण रणनीतियों पर जोर दिया गया।

भारत के स्वास्थ्य आयाम (अवसंरचना और मानव संसाधन) 2022-23" वार्षिक

स्वास्थ्य मंत्रालय ने **"भारत के स्वास्थ्य आयाम (अवसंरचना और मानव संसाधन) 2022-23"** नामक वार्षिक प्रकाशन जारी किया। यह दस्तावेज, जिसे पहले **"ग्रामीण स्वास्थ्य सांख्यिकी"** के रूप में जाना जाता था, **1992 से प्रकाशित** हो रहा है।

एनएचएम के अंतर्गत महत्वपूर्ण दस्तावेज:

इस प्रकाशन को **राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम)** के विभिन्न आयामों पर **विश्वसनीय और प्रामाणिक जानकारी** का स्रोत माना जाता है। यह दस्तावेज राज्यों में **जनशक्ति और अवसंरचना** की **उपलब्धता और कमियों का क्षेत्र-आधारित विश्लेषण** प्रस्तुत करता है, जो नीति निर्माण और सुधार प्रक्रियाओं के लिए अहम है।

स्वास्थ्य पोर्टल्स का एकीकरण:

- ✓ **स्वास्थ्य प्रबंधन सूचना प्रणाली (HMIS) पोर्टल** को **प्रजनन और बाल स्वास्थ्य (RCH)** तथा **अन्य मंत्रालयिक पोर्टलों** के साथ **जोड़ने** की आवश्यकता पर जोर दिया।
- ✓ इसका उद्देश्य स्वास्थ्य कर्मियों के **कार्यभार को कम करना** और **समय पर डेटा अपलोडिंग एवं विश्लेषण** सुनिश्चित करना है।

प्रकाशन की पृष्ठभूमि:

1992 से प्रकाशित, यह दस्तावेज प्रत्येक वर्ष के अंत तक **स्वास्थ्य अवसंरचना और मानव संसाधनों** का विस्तृत डेटा प्रदान करता है। यह डेटा **स्वास्थ्य सेवा योजनाओं**, **प्रबंधन** और **निगरानी** में सहायक होता है। प्रकाशन **ग्रामीण**, **शहरी** और **आदिवासी** क्षेत्रों की **कमियों** का पता लगाने के लिए एक अहम साधन है।

प्रकाशन की संरचना:

प्रकाशन के दो मुख्य भाग हैं:

1. **राज्यों की प्रोफाइल और राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रणाली का समग्र दृश्य:** मानचित्रों और चार्ट्स के साथ जानकारी प्रस्तुत करता है।
2. **विस्तृत डेटा:** नौ खंडों में विभाजित यह भाग स्वास्थ्य सुविधाओं, जनशक्ति और जनसांख्यिकीय संकेतकों पर गहन जानकारी प्रदान करता है।

स्वास्थ्य सेवा की स्थिति:

- 31 मार्च, 2023 तक देश में **कुल 1,69,615 उप-केंद्र (SC), 31,882 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (PHC), 6,359 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (CHC), 1,340 उप-मंडल/जिला अस्पताल (SDH), 714 जिला अस्पताल** (DH), और 362 मेडिकल कॉलेज (MC) हैं।
- इन स्वास्थ्य सुविधाओं का संचालन स्वास्थ्य **कार्यकर्ताओं, डॉक्टरों, विशेषज्ञों, नर्सिंग स्टाफ और पैरामेडिकल स्टाफ** द्वारा किया जाता है।

प्रकाशन की प्रमुख विशेषताएं:

- **तुलनात्मक विश्लेषण: 2005 और 2023** के बीच स्वास्थ्य अवसंरचना और जनशक्ति की प्रगति और अंतराल को उजागर करता है।
- **जिला-स्तरीय डेटा:** सभी स्वास्थ्य सुविधाओं का जिलेवार विवरण प्रदान करता है।
- **क्षेत्रीय विश्लेषण: ग्रामीण, शहरी और आदिवासी** क्षेत्रों में अवसंरचना और जनशक्ति का विवरण।
- **प्रमुख स्वास्थ्य सूचकांक: राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों** को स्वास्थ्य देखभाल प्रदर्शन के आधार पर वर्गीकृत करता है।

नीति निर्धारण में मददगार दस्तावेज:

- ✓ यह **दस्तावेज नीति निर्माताओं** को स्वास्थ्य सेवाओं की बेहतर योजना और वितरण के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करता है।
- ✓ इसका **डेटा विभिन्न क्षेत्रों में आवश्यकताओं** की पहचान करने और संसाधनों को सही ढंग से आवंटित करने में सहायक होता है।

स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार के लिए मार्गदर्शक:

- **"भारत के स्वास्थ्य आयाम"** प्रकाशन स्वास्थ्य सेवा प्रणाली को और मजबूत बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे देश की जनसंख्या की जरूरतों को पूरा करने के लिए बेहतर नीतियाँ बनाई जा सकें।

MIGA और ISA ने सौर परियोजनाओं को बढ़ावा देने के लिए ट्रस्ट फंड की स्थापना की

मल्टीलैटरल इन्वेस्टमेंट गारंटी एजेंसी (MIGA) और **अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA)** ने मिलकर **"MIGA-ISA सोलर सुविधा"** नामक एक **बहु-दाता ट्रस्ट फंड** की स्थापना की है। **MIGA, जो विश्व बैंक समूह का हिस्सा है**, विकासशील देशों में निवेशकों और ऋणदाताओं को राजनीतिक जोखिम बीमा और क्रेडिट गारंटी के रूप में सुरक्षा प्रदान करता है, जिससे सीमा पार निवेश को बढ़ावा मिलता है। **भारत भी इसका सदस्य है।**

MIGA-ISA सोलर सुविधा क्या है?

यह सुविधा **ISA की तकनीकी विशेषज्ञता और MIGA की वित्तीय संसाधन जुटाने** की क्षमता को मिलाकर सौर ऊर्जा के वैश्विक उपयोग को तेजी से बढ़ाने का काम करेगी। इसमें अत्याधुनिक **सौर ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के उपयोग को बढ़ावा** देने पर भी जोर दिया जाएगा।

लक्ष्य क्षेत्र:

शुरुआत में, इस सुविधा का मुख्य ध्यान **उप-सहारा अफ्रीका** पर रहेगा, लेकिन भविष्य में इसे **अन्य वैश्विक क्षेत्रों में भी विस्तार** करने की योजना है।

फंडिंग और वित्तीय योगदान:

- ✓ ISA ने इस सुविधा के लिए **$2 मिलियन का सीड-फंडिंग प्रदान** किया है, और इसका लक्ष्य **$10 मिलियन तक** जुटाने का है।
- ✓ यह ISA के वैश्विक सौर सुविधा (GSF) का **पहला कार्यक्रम** है, जिसमें **अफ्रीका** में सौर परियोजनाओं के लिए **$200 मिलियन जुटाने** का लक्ष्य है।

GSF का उद्देश्य:

- GSF का मुख्य लक्ष्य अफ्रीका के उन क्षेत्रों में सौर ऊर्जा निवेश को प्रोत्साहित करना है जहाँ **ऊर्जा की कमी है।**
- इसके लिए **भुगतान गारंटी, बीमा, और निवेश निधियों का उपयोग किया** जाएगा ताकि परियोजनाओं में निवेश को आकर्षित किया जा सके।

महत्व:

ISA सौर परियोजनाओं के विकास के लिए अपने सदस्य देशों को **सस्ती जोखिम शमन उपकरण (Risk Mitigation Tools)** प्रदान करता है। इसका उद्देश्य **कम सेवा वाले क्षेत्रों में ऊर्जा पहुंच में सुधार करना और निजी निवेश को आकर्षित करना** है ताकि **सौर ऊर्जा की लागत को कम** किया जा सके।

अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA):

- **स्थापना:** ISA की परिकल्पना **भारत और फ्रांस ने संयुक्त राष्ट्र के पेरिस समझौते (CoP21, 2015)** के दौरान की थी।
- **उद्देश्य:** सौर ऊर्जा के **उपयोग को बढ़ावा देने और अपने सदस्य देशों में ऊर्जा** बदलाव को प्रोत्साहित करने के लिए यह एक सहयोगी मंच है।
- **लक्ष्य:** ISA की **'1000' रणनीति के तहत 2030 तक सौर ऊर्जा में $1,000 बिलियन का निवेश जुटाना, 1,000 मिलियन लोगों तक ऊर्जा पहुंचाना, और 1,000 गीगावाट सौर ऊर्जा क्षमता** स्थापित करना।
- **सदस्यता:** वर्तमान में **100 से अधिक देश ISA के सदस्य** हैं, और **2020 के संशोधन के बाद, संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य राज्य ISA में** शामिल होने के पात्र हैं।

इस प्रकार, MIGA और ISA के इस संयुक्त प्रयास से सौर ऊर्जा के विकास और वैश्विक स्तर पर इसकी पहुंच में महत्वपूर्ण वृद्धि होगी।

भारत-अमरीका संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण 'युद्ध अभ्यास-2024'

भारत और अमेरिका के बीच **संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण 'युद्ध अभ्यास-2024'** का **20वां संस्करण राजस्थान के महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में विदेशी प्रशिक्षण केंद्र** में प्रारंभ हुआ। यह **युद्धाभ्यास 9 से 22 सितंबर 2024 तक** जारी रहेगा। यह अभ्यास वर्ष **2004 से प्रतिवर्ष भारत और अमेरिका के बीच** बारी-बारी से आयोजित किया जा रहा है।

- ✓ **सैन्य ताकत और भागीदार:**
  - इस संस्करण में सैन्य शक्ति और उपकरणों के संदर्भ में उल्लेखनीय वृद्धि की गई है।
  - भारतीय सेना की टुकड़ी, जिसमें **राजपूत रेजिमेंट की एक बटालियन और अन्य शाखाओं** के कर्मी शामिल हैं, कुल **600 सैनिकों** का प्रतिनिधित्व करती है।
  - अमेरिकी सेना की टुकड़ी, जिसमें **अलास्का स्थित 11वीं एयरबोर्न डिवीजन की 1-24 बटालियन के सैनिक** शामिल हैं, समान शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है।
- ✓ **अभ्यास का उद्देश्य और फोकस:**
  - इस संयुक्त अभ्यास का मुख्य उद्देश्य **संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अध्याय VII के तहत आतंकवाद विरोधी अभियान चलाने** के लिए दोनों पक्षों की संयुक्त सैन्य क्षमता को सुदृढ़ करना है।
  - यह अभ्यास विशेष रूप से **अर्ध-रेगिस्तानी वातावरण में संचालन** पर केंद्रित है।
- ✓ **सामरिक अभ्यास और गतिविधियाँ:**
  - युद्ध प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न सामरिक अभ्यास किए जाएंगे, जिसमें **आतंकवादी कार्रवाई पर संयुक्त प्रतिक्रिया, संयुक्त योजना और क्षेत्रीय प्रशिक्षण** शामिल हैं। ये अभ्यास वास्तविक दुनिया के आतंकवाद-रोधी मिशनों में उपयोगी साबित होंगे।
- ✓ **संयुक्त अभियान और सहयोग:**
  - 'युद्ध अभ्यास' दोनों पक्षों को संयुक्त अभियान चलाने की **रणनीतियों, तकनीकों और प्रक्रियाओं में सर्वोत्तम अभ्यास साझा** करने का अवसर प्रदान करेगा।
  - इससे दोनों सेनाओं के बीच **अंतर-संचालन क्षमता और सौहार्द** को बढ़ावा मिलेगा।
  - संयुक्त अभ्यास से रक्षा **सहयोग भी मजबूत** होगा, जिससे भारत और अमेरिका के बीच **द्विपक्षीय संबंधों में और वृद्धि होगी।**

भारत के प्रमुख संयुक्त युद्ध अभ्यास	
देश	**युद्ध अभ्यास**
ऑस्ट्रेलिया	AUSTRA HINDBAH
बांग्लादेश	सम्प्रीति
चीन	हैंड इन हैंड
फ्राँस	शक्ति
इंडोनेशिया	गरुड़ शक्ति
कजाखस्तान	प्रबल दोस्त्यक
किर्गिज़स्तान	खंजर
मालदीव	एकुवेरिन
मंगोलिया	नोमडिक एलीफैंट
म्याँमार	इंबेक्स (IMBEX)
नेपाल	सूर्य किरण
ओमान	अल-नागाह
रूस	इंद्र
सेशल्स	लामितिये (LAMITIYE)
श्रीलंका	मित्र शक्ति
थाईलैंड	मैत्री
ब्रिटेन	अजय वॉरियर
संयुक्त राज्य अमेरिका	युद्धाभ्यास
संयुक्त राज्य अमेरिका	वज्र प्रहार

एंटी-सबमरीन वारफेयर शैलो वॉटर क्राफ्ट 'मालपे और मुलकी'

मैसर्स कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड (CSL) द्वारा भारतीय नौसेना के लिए निर्मित **आठ एंटी-सबमरीन वारफेयर शैलो वॉटर क्राफ्ट (ASW SWC) परियोजना** के **चौथे और पांचवें** जहाजों, **मालपे और मुलकी,** का जलावतरण 09 सितंबर, 2024 को कोच्चि में किया गया।

सामरिक महत्व के बंदरगाहों पर आधारित नामकरण:

- ✓ माहे श्रेणी के इन **ASW शैलो वाटर क्राफ्ट्स का नाम** भारत के तट पर स्थित **सामरिक महत्व के बंदरगाहों के नाम** पर रखा गया है।
- ✓ ये जहाज भारतीय नौसेना के पूर्ववर्ती **माइनस्वीपर्स** की गौरवशाली विरासत को आगे बढ़ाने का प्रयास करेंगे, जो कि भारतीय नौसेना की **ताकत और सामरिक क्षमता** का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं।

निर्माण और अनुबंध:

- **रक्षा मंत्रालय और कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड** के बीच **आठ ASW SWC जहाजों के निर्माण** के अनुबंध पर **30 अप्रैल, 2019** को हस्ताक्षर किए गए थे।
- इन जहाजों का निर्माण **'आत्मनिर्भर भारत'** की पहल के तहत स्वदेशी रूप से किया जा रहा है, जो भारतीय नौसेना की समुद्री क्षमताओं को बढ़ावा देने के साथ-साथ रक्षा क्षेत्र में स्वदेशी निर्माण को भी प्रोत्साहित करता है।

अत्याधुनिक अंडरवाटर सेंसर से सुसज्जित:

- ✓ माहे श्रेणी के ये जहाज अत्याधुनिक स्वदेशी **अंडरवाटर सेंसर** से लैस होंगे।
- ✓ इन जहाजों को तटीय जल में पनडुब्बी रोधी अभियानों के साथ-साथ **कम तीव्रता के समुद्री संचालन (एलआईएमओ) और खदान बिछाने** के कार्यों के लिए तैयार किया गया है।
- ✓ इनकी **1800 नॉटिकल मील** तक की **सहनशक्ति और 25 नॉट** की अधिकतम गति उन्हें सामरिक रूप से और भी महत्वपूर्ण बनाती है।

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में प्रगति:

- दो जहाजों का एक साथ जलावतरण भारत की **स्वदेशी जहाज निर्माण क्षमता** में हो रही प्रगति को दर्शाता है।
- इन जहाजों में **80% से अधिक स्वदेशी सामग्री** का उपयोग किया गया है, जिससे यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि **बड़े पैमाने पर रक्षा उत्पादन भारतीय विनिर्माण इकाइयों के द्वारा** किया जाए।

मुंबई समाचार की डॉक्यूमेंट्री '200 नॉट आउट' का विमोचन

देश के किसानों ने एक बार फिर अपनी मेहनत और लगन का परिचय देते हुए खरीफ फसलों की बुवाई में रिकॉर्ड वृद्धि दर्ज की है। कृषि मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, इस वर्ष खरीफ फसलों के तहत कुल बुवाई क्षेत्र 1092 लाख हेक्टेयर से अधिक हो गया है। यह पिछले वर्ष की तुलना में एक बड़ी छलांग है।

प्रमुख फसलों में उल्लेखनीय वृद्धि:

- ✓ **धान:** इस वर्ष धान की खेती **409.50 लाख हेक्टेयर** में हुई है, जो पिछले वर्ष के **393.57 लाख हेक्टेयर** की तुलना में काफी अधिक है।
- ✓ **दलहन:** दलहन की खेती में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इस वर्ष **126.20 लाख हेक्टेयर** में दलहन की बुवाई की गई है, जो पिछले वर्ष के **117.39 लाख हेक्टेयर** से अधिक है।
- ✓ **श्री अन्न/मोटे अनाज:** श्री अन्न या मोटे अनाज की खेती भी बढ़कर **188.72 लाख हेक्टेयर** हो गई है, जो पिछले वर्ष के **181.74 लाख हेक्टेयर** की तुलना में अधिक है।
- ✓ **तिलहन:** तिलहन की खेती में भी वृद्धि देखी गई है। इस वर्ष **192.40 लाख हेक्टेयर** में तिलहन की बुवाई की गई है, जो पिछले वर्ष के **189.44 लाख हेक्टेयर** से अधिक है।
- ✓ **गन्ना:** गन्ने की खेती में भी मामूली वृद्धि हुई है। इस **वर्ष 57.68 लाख हेक्टेयर** में गन्ने की बुवाई की गई है, जो पिछले वर्ष के **57.11 लाख हेक्टेयर** से अधिक है।

किसानों की मेहनत रंग लाई:

खरीफ फसलों की बुवाई में इस रिकॉर्ड वृद्धि से देश में खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि होने की उम्मीद है। यह किसानों की **मेहनत और सरकार द्वारा कृषि क्षेत्र** में किए जा रहे प्रयासों का परिणाम है।

आगे की राह:

इस उपलब्धि के बावजूद, सरकार को **कृषि क्षेत्र में और अधिक सुधार** करने के लिए निरंतर प्रयास करने होंगे। इसमें **सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, किसानों को बेहतर बीज और उर्वरक उपलब्ध कराना, कृषि बाजारों को सुदृढ़ करना और किसानों को उचित मूल्य दिलाना** शामिल है।

बेपीकोलंबो मिशन

5 सितंबर 2024 को, **संयुक्त यूरोपीय-जापानी बेपीकोलंबो मिशन (BepiColombo Mission)** ने बुध ग्रह के पास से अपनी चौथी सफल उड़ान भरी। यह मिशन 2026 से बुध ग्रह की परिक्रमा शुरू करेगा।

बेपीकोलंबो मिशन: उद्देश्य और संरचना

- ✓ **मिशन का परिचय:** बेपीकोलंबो मिशन **यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA)** और **जापान एयरोस्पेस एक्सप्लोरेशन एजेंसी (JAXA)** के बीच एक संयुक्त प्रयास है, जिसका उद्देश्य बुध ग्रह की गहन जांच करना है। मिशन में दो प्रमुख अंतरिक्ष यान शामिल हैं:
  - **ESA का मरकरी प्लैनेटरी ऑर्बिटर (MPO):** बुध ग्रह की सतह और आंतरिक संरचना का अध्ययन करेगा।
  - **JAXA का मरकरी मैग्नेटोस्फेरिक ऑर्बिटर (MIO):** बुध ग्रह के चुंबकीय क्षेत्र का विश्लेषण करेगा।
- ✓ इस मिशन को **20 अक्टूबर 2018** को लॉन्च किया गया था।
- ✓ इसका नाम **ग्यूसेप "बेपी" कोलंबो** के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने बुध ग्रह की कक्षा को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।
- ✓ अभी तक सिर्फ दो अन्य अंतरिक्ष यान बुध ग्रह तक पहुंचने में सफल रहे हैं। उनका नाम हैं- **नासा का मेरिनर 10 और मैसेंजर।**

मिशन के उद्देश्य:

बेपीकोलंबो मिशन के मुख्य उद्देश्य हैं:

- बुध ग्रह के **चुंबकीय क्षेत्र** का अध्ययन
- बुध ग्रह की **सतह और आंतरिक संरचना** का अध्ययन
- बुध ग्रह के **वायुमंडल** का अध्ययन
- बुध ग्रह के **गठन और विकास** का अध्ययन

चुनौतियाँ:

बुध ग्रह के पास एक अंतरिक्ष यान भेजना बहुत चुनौतीपूर्ण कार्य है। **सूर्य का मजबूत गुरुत्वाकर्षण** अंतरिक्ष यान को अपनी ओर खींचता है, जिससे इसे बुध ग्रह की कक्षा में स्थापित करना मुश्किल हो जाता है।

भविष्य की संभावनाएं:

बेपीकोलंबो मिशन से प्राप्त डेटा हमें **बुध ग्रह के बारे में कई महत्वपूर्ण जानकारी** देगा। यह हमें सौरमंडल के **निर्माण और विकास** के बारे में भी बेहतर समझने में मदद करेगा।

SEBI के नए FVCI नियम

SEBI ने **विदेशी वेंचर कैपिटल निवेशकों (FVCI)** के पंजीकरण के नियमों को **आसान और सुव्यवस्थित** करने के लिए मौजूदा **SEBI (FVCI) विनियम, 2000** में बदलाव किया है। इन नए नियमों का उद्देश्य **विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (FPI) के साथ FVCI के ढांचे** को मिलाकर **स्पष्टता और निरीक्षण** बढ़ाना है।

FVCI क्या है?

FVCI वह निवेशक है जो भारत के बाहर से आता है और SEBI के तहत पंजीकृत होता है। यह निवेशक भारत में **वेंचर कैपिटल फंड्स (VCF)** या **वेंचर कैपिटल उपक्रमों (जो बड़ी स्टॉक एक्सचेंजों पर सूचीबद्ध नहीं हैं)** में निवेश करता है। VCF का इस्तेमाल उन व्यवसायों में किया जाता है जहाँ **अधिक जोखिम होता है लेकिन मुनाफे की संभावनाएँ भी ज्यादा** होती हैं।

नए नियमों की मुख्य बातें:

1. **पंजीकरण का नया तरीका:** अब FVCI आवेदकों को SEBI द्वारा अधिकृत **"नामित डिपॉजिटरी प्रतिभागी"** (DDP) से पंजीकरण प्रमाणपत्र प्राप्त करना होगा।
2. **DDP का महत्व:** DDP वह व्यक्ति या संस्था होती है जिसे SEBI द्वारा पंजीकरण प्रमाणपत्र जारी करने के लिए अधिकृत किया गया है। कोई भी व्यक्ति या संस्था जो FVCI के साथ काम करना चाहती है, उसे पहले DDP से प्रमाणपत्र लेना होगा।
3. **FVCI के लिए पात्रता का विस्तार:** नए नियमों के तहत FVCI के लिए पात्रता को मौजूदा संस्थाओं जैसे **निवेश कंपनियों, पेंशन फंड्स** आदि के लिए बढ़ाया गया है, जिससे उन्हें कुछ शर्तों के साथ **पंजीकरण** की अनुमति मिलती है। इसके अलावा, **भारतीय निवासी, NRI और OCI** भी, बिना **FVCI** के **कॉर्पस** में योगदान किए, उस पर नियंत्रण रख सकते हैं।
4. **समझौता करने की अनिवार्यता:** FVCI या उसके वैश्विक संरक्षक को भारत में निवेश करने से पहले **DDP और संरक्षक दोनों के साथ समझौता** करना आवश्यक होगा।

भारत में एफवीसीआई निवेश का प्रभाव:

- FVCI वे निवेशक हैं जो भारत के बाहर से आते हैं और वेंचर कैपिटल उपक्रमों और वेंचर कैपिटल फंड्स की गैर-सूचीबद्ध प्रतिभूतियों में निवेश करते हैं।
- मार्च 2023 तक, **269 FVCI SEBI के साथ पंजीकृत** थे, जिनका कुल निवेश **भारतीय कंपनियों में ₹48,286 करोड़** था।

भारतीय साइबर अपराध समन्वय केन्द्र (आई4सी)

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने नई दिल्ली में **भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C)** के **पहले स्थापना दिवस समारोह** में घोषणा की कि अगले **पांच वर्षों में 5,000 साइबर कमांडो को प्रशिक्षित** किया जाएगा। यह पहल साइबर अपराधों से निपटने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।

भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C) के बारे में:

- ✓ भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C) भारत सरकार द्वारा स्थापित एक प्रमुख पहल है जिसका उद्देश्य **साइबर अपराध से संबंधित मुद्दों का समन्वय और समाधान** करना है।
- ✓ **इसे 2018 में स्थापित किया गया** था और
- ✓ इसका **मुख्यालय नई दिल्ली** में स्थित है।
- ✓ I4C का प्रमुख लक्ष्य **साइबर अपराधों की रोकथाम, इनकी जांच और अपराधियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई को सुनिश्चित** करना है।

I4C के प्रमुख कार्यों में शामिल हैं:

1. **साइबर अपराधों की जानकारी एकत्र करना और विश्लेषण करना:** I4C विभिन्न **साइबर अपराधों की जानकारी** एकत्र करता है और उनका विश्लेषण करता है ताकि समय पर कार्रवाई की जा सके।
2. **साइबर सुरक्षा उपायों को बढ़ावा देना:** यह केंद्र साइबर सुरक्षा से संबंधित जागरूकता अभियान चलाता है और **नागरिकों, संगठनों, और अन्य सरकारी विभागों को साइबर सुरक्षा** के बेहतर उपायों के बारे में जानकारी प्रदान करता है।
3. **समन्वय और सहयोग:** I4C विभिन्न राज्यों और **केंद्रीय एजेंसियों के साथ मिलकर काम** करता है ताकि साइबर अपराधों की **रोकथाम और अपराधियों** के खिलाफ कार्रवाई की जा सके।
4. **डिजिटल साक्षरता और प्रशिक्षण:** यह केंद्र साइबर **अपराधों की रोकथाम और सुरक्षा के उपायों पर प्रशिक्षण और साक्षरता कार्यक्रम** आयोजित करता है।
5. **उन्नत तकनीकी समाधान:** I4C **नई और उन्नत तकनीकी** समाधान प्रदान करता है जो साइबर अपराधों की **पहचान और समाधान** में मददगार होते हैं।

I4C के द्वारा लागू की गई **योजनाएं और नीतियाँ** साइबर अपराध की **जटिलताओं को बेहतर ढंग से समझने और उनसे निपटने** में सहायक साबित हो रही हैं।

भारतीय सांख्यिकी आयोग (NSC) का बढ़ता महत्व

सांख्यिकी पर स्थायी समिति (SCoS) के विघटन के बाद, **राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग (NSC)** को **सर्वेक्षण पद्धति और परिणामों** से जुड़े मुद्दों का समाधान करने के लिए **प्राथमिक सांख्यिकीय निकाय** के रूप में अधिक **जिम्मेदारी** सौंपी गई है।

- ✓ **सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI)** ने **SCoS** को समाप्त करने का निर्णय लिया। इसका कारण **स्टीयरिंग कमेटी और SCoS के कार्यों में ओवरलैप** होना बताया गया।

भारतीय सांख्यिकी आयोग (NSC) के बारे में -

- **गठन: 2005** में एक प्रस्ताव के माध्यम से स्थापित किया गया।
- **NSC की स्थापना 2001 में भारतीय सांख्यिकी प्रणाली की** समीक्षा करने वाले **रंगराजन आयोग** की सिफारिशों को स्वीकार करने के लिए मंत्रिमंडल के निर्णय के बाद हुई।
- **मंत्रालय:** MoSPI (सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय)।
- **भारत के मुख्य सांख्यिकीविद्** आयोग के **सचिव** होते हैं।
- **संरचना: एक अध्यक्ष** के अलावा **4 सदस्य,** जिनमें से प्रत्येक के पास **निर्दिष्ट सांख्यिकीय क्षेत्रों में विशेषज्ञता और अनुभव** है।

NSC का कार्यक्षेत्र:

- ✓ NSC अब **सर्वेक्षण ढांचे की समीक्षा, नमूना डिजाइन और पद्धतियों पर समितियों और कार्य समूहों** का गठन करेगा।
- ✓ यह संस्था **2006 से पूर्व NSSO की जिम्मेदारियों का निर्वहन** कर रही है।

NSC की प्रमुख जिम्मेदारियां:

- **सर्वेक्षण पद्धति और नमूना डिजाइन** पर सलाह देना
- **सर्वेक्षणों से संबंधित विषयों, परिणामों और पद्धतियों** से जुड़े मुद्दों का समाधान करना
- **सांख्यिकीय सर्वेक्षणों के लिए समितियों** का गठन करना

स्टीयरिंग कमेटी की भूमिका:

- NSS के लिए बनाई गई **स्टीयरिंग कमेटी का कार्य सर्वेक्षण पद्धति, नमूना फ्रेम और सर्वेक्षण उपकरणों पर सलाह** देना है।
- अब NSC के अंतर्गत इस तरह की जिम्मेदारियों का प्रबंधन किया जाएगा।

NSC अब भारत के **सांख्यिकीय सर्वेक्षणों का मार्गदर्शन करने वाला प्रमुख संस्थान** है और इसके तहत आने **वाली स्टीयरिंग कमेटी से देश की सांख्यिकीय संरचना और भी मज़बूत होगी।**

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,

Stenographer (Grades C & D)

Only at

99/-Year

Enroll Now !

APNI PATHSHALA

UPPSC,RO/ARP,BPSC,UP TEST SERIES

UPPSC
(TEST SERIES)
- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

299/- YEAR

RO/ARO
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

BPSC
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299 YEAR

SSC (TEST SERIES)
- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

RPF (TEST SERIES)
- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

2024

GA FOUNDATION

RECORDED BATCH

Subject

- HISTORY ,POLITY
- GEOGRAPHY
- ECONOMICS

Price

1499/-

Validity
1 Year

By Ankit Avasthi Sir

GA FOUNDATION

Hand Written Notes

Apni Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Ankit Inspires India

₹ Only 1999

4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

7878158882